भारत सरकार

आयुष मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 2174

31 जुलाई, 2026 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों का संवर्धन

2174. श्री कुंदुरु रघुवीर:

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने इस ओर ध्यान दिया है कि यद्यपि योग को व्यापक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त हुई है, तथापि, आयुष के तहत अन्य पारंपरिक पद्धतियों, अर्थात् आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी, सोवा-रिग्पा और होम्योपैथी के लिए अधिक सार्वजनिक जागरूकता और स्वीकार्यता की आवश्यकता है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) सरकार द्वारा इन पारंपरिक पद्धतियों की प्राचीन थेरेपी, स्वदेशी उपचार पद्धतियों और औषधीय ज्ञान सहित इन्हें संरक्षित, प्रलेखित, वैज्ञानिक रूप से विधिमान्य बनाने और बढ़ावा देने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं;

(ग) क्या सरकार ने साक्ष्य-आधारित आयुष उपचारों को सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली के साथ एकीकृत करने, आयुष संस्थानों को सुदृढ़ करने, अनुसंधान को बढ़ावा देने और चिकित्सकों को प्रशिक्षित करने के लिए कार्यक्रम शुरू किए हैं और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(घ) शैक्षणिक संस्थानों, डिजिटल प्लेटफॉर्मों और सार्वजनिक आउटरीच अभियानों के माध्यम से युवा पीढ़ी के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए सरकार द्वारा क्या पहल की गई हैं; और

(ङ) विगत पाँच वर्षों के दौरान योग के साथ-साथ भारत की पारंपरिक चिकित्सा विरासत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए प्रदत्त वित्तीय सहायता, कार्यान्वित की गई अनुसंधान परियोजनाओं और जागरूकता कार्यक्रमों का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

आयुष मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(श्री प्रतापराव जाधव)

(क): आयुष मंत्रालय सभी आयुष चिकित्सा पद्धतियों, अर्थात आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, सोवा-रिग्पा एवं होम्योपैथी को बढ़ावा दे रहा है, जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जन-जागरूकता, पहुंच एवं स्वीकार्यता को बढ़ाना है। आयुष मंत्रालय अपनी सूचना, शिक्षा एवं संचार (आईईसी) योजना के माध्यम से विभिन्न जागरूकता कार्यक्रमों एवं प्रचार-प्रसार गतिविधियों द्वारा सभी आयुष चिकित्सा पद्धतियों को बढ़ावा देने का कार्य कर रहा है। इस योजना का उद्देश्य देशभर में विभिन्न जागरूकता कार्यक्रमों एवं आयोजनों के संचालन हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करके जनसंपर्क एवं जन-जागरूकता का विस्तार करना है। इसके अंतर्गत आरोग्य मेले, आयुर्वेद पर्व, स्वास्थ्य मेले, प्रदर्शनियाँ, संगोष्ठियाँ, सम्मेलन, कार्यशालाएँ और मल्टीमीडिया प्रचार अभियान आयोजित किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त, मंत्रालय आयुर्वेद दिवस, सिद्ध दिवस, यूनानी दिवस तथा होम्योपैथी दिवस जैसे महत्वपूर्ण दिवसों का भी आयोजन करता है, ताकि जन-जागरूकता बढ़ाई जा सके तथा आयुष स्वास्थ्य

सेवाओं को अपनाने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया जा सके। इसके अतिरिक्त, अंतरराष्ट्रीय सहयोग (आईसी) योजना के अंतर्गत, मंत्रालय निरंतर द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय सहयोग, शैक्षणिक सहयोग, आदान-प्रदान कार्यक्रमों, विदेशों में आयुष अकादमिक चेयरों एवं सूचना प्रकोष्ठों की स्थापना तथा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों, प्रदर्शनियों एवं अन्य वैश्विक मंचों में भागीदारी के माध्यम से आयुष के प्रचार-प्रसार हेतु अंतरराष्ट्रीय साझेदारियों को बढ़ावा देता है। ये सभी गतिविधियाँ जनता के बीच विभिन्न आयुष चिकित्सा पद्धतियों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने तथा उनके व्यापक उपयोग को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच का कार्य करती हैं।

(ख): आयुष मंत्रालय के अंतर्गत केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद् (सीसीआरएएस) की इकाई राष्ट्रीय भारतीय आयुर्विज्ञान संपदा संस्थान (एनआईआईएमएच), हैदराबाद एक चिकित्सा-ऐतिहासिक पुस्तकालय का संचालन करता है, जिसमें आयुर्वेद, सिद्ध, योग, यूनानी, होम्योपैथी आदि से संबंधित पांडुलिपियों एवं दुर्लभ ग्रंथों का महत्वपूर्ण संग्रह उपलब्ध है। यह संस्थान देश के विभिन्न पांडुलिपि भंडारों, राज्य संग्रहालयों, शैक्षणिक संस्थानों, पुस्तकालयों तथा निजी संग्रहों से संकलित चिकित्सा संबंधी पांडुलिपियों एवं दुर्लभ ग्रंथों का एक डिजिटल भंडार भी संधारित करता है। सीसीआरएएस द्वारा तीन सहकर्मी-समीक्षित शोध पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता है, जिनमें (i) जर्नल ऑफ ड्रग रिसर्च इन आयुर्वेदिक साइंसेज़ (जेडीआरएएस), (ii) जर्नल ऑफ रिसर्च इन आयुर्वेदिक साइंसेज़ (जेआरएएस) तथा (iii) जर्नल ऑफ इंडियन मेडिकल हेरिटेज (जेआईएमएच) शामिल हैं। ये तीनों पत्रिकाएँ अनुसंधान निष्कर्षों के व्यापक प्रसार हेतु सार्वजनिक क्षेत्र में इलेक्ट्रॉनिक रूप निःशुल्क उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त, आयुष मंत्रालय ने आयुष ग्रिड मंच के अंतर्गत आयुष अनुसंधान पोर्टल विकसित किया है, जो आयुष आधारित प्रकाशित शोध लेखों के सुव्यवस्थित प्रसार के लिए एक केंद्रीकृत डिजिटल मंच उपलब्ध कराकर साक्ष्य-आधारित चिकित्सा पद्धति को सुदृढ़ करता है। इस पोर्टल पर 43,000 से अधिक शोध अध्ययनों का संकलन उपलब्ध है तथा यह शोधकर्ताओं, चिकित्सकों एवं नीति-निर्माताओं को इन अध्ययनों तक सहज पहुँच प्रदान करता है।

(ग): आयुष मंत्रालय ने भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद् (आईआईसीएमआर) के सहयोग से चयनित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थानों (एआईआईएमएस) में आयुष-आईसीएमआर समेकित स्वास्थ्य अनुसंधान उन्नत केंद्र (एआई-एसीआईएचआर) स्थापित किए हैं। इन केंद्रों का उद्देश्य उच्च गुणवत्ता वाले वैज्ञानिक साक्ष्य विकसित करना तथा एकीकृत स्वास्थ्य देख-रेख सेवा के प्रभावी मॉडल विकसित करना है। ये केंद्र दीर्घकालिक अवरोधक फुफ्फुसीय रोग (सीओपीडी) में फुफ्फुसीय पुनर्वास, पॉलीसिस्टिक ओवेरियन सिंड्रोम (पीसीओएस), गर्भावधि मधुमेह, अग्न्याशय-पित्त संबंधी रोगों तथा कार्सिनोमा जैसी प्राथमिकता प्राप्त स्वास्थ्य समस्याओं पर अनुसंधान कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, आयुष मंत्रालय के अधीन केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद् (सीसीआरएच) ने होम्योपैथी को राष्ट्रीय कैंसर, मधुमेह, हृदय-वाहिका रोग एवं आघात (स्ट्रोक) निवारण एवं नियंत्रण कार्यक्रम (एनपीसीडीसीएस) के साथ एकीकृत किया है। स्वास्थ्य रक्षण कार्यक्रम (एसआरपी) इन प्रयासों को और सुदृढ़ करते हुए समुदायों को घर-घर निवारक एवं प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराता है। सभी अनुसंधान परिषदों के चिकित्सकों एवं अनुसंधान अधिकारियों को उनके ज्ञान तथा अनुसंधान क्षमताओं के संवर्धन हेतु नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। आयुष मंत्रालय के अंतर्गत अनुसंधान परिषद्–जो आयुर्वेद, होम्योपैथी, सिद्ध, यूनानी तथा योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्रों में कार्यशील हैं–अपनी-अपनी चिकित्सा प्रणालियों से संबंधित अनुसंधान गतिविधियों में सक्रिय रूप से संलग्न हैं।

(घ): आयुष मंत्रालय, युवा पीढ़ी सहित समाज के सभी वर्गों, के बीच आयुष चिकित्सा पद्धतियों के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से आयुष में सूचना, शिक्षा एवं संचार (आईईसी) के संवर्धन हेतु केंद्रीय क्षेत्र की योजना का क्रियान्वयन करता है। इस योजना के अंतर्गत देश के विभिन्न भागों में

राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय आरोग्य मेलों, योग उत्सवों, आयुर्वेद पर्वों तथा अन्य जन-जागरूकता एवं जनसंपर्क गतिविधियों के आयोजन हेतु वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। मंत्रालय आयुष चिकित्सा पद्धतियों के प्रति नागरिकों में व्यापक जागरूकता एवं स्वीकार्यता को बढ़ावा देने के लिए मल्टीमीडिया एवं प्रिंट मीडिया अभियानों का संचालन भी करता है तथा अपने आधिकारिक डिजिटल माध्यमों, जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स एवं यूट्यूब के माध्यम से भी नियमित रूप से सूचना का प्रसार करता है। इसके अतिरिक्त, मंत्रालय ने आयुष चिकित्सा शिक्षा पाठ्यक्रम में विनियामक सुधारों के माध्यम से जन-जागरूकता, विशेषकर युवा पीढ़ी के बीच जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से अनेक पहलें की हैं। इन पहलों में शैक्षणिक संस्थानों के माध्यम से निवारक एवं सामुदायिक चिकित्सा कार्यक्रमों का संचालन, परिधीय बाह्य रोगी विभागों (ओपीडी) के माध्यम से जन-जागरूकता का प्रसार, स्वास्थ्य जागरूकता के लिए निकटवर्ती गाँवों को गोद लेना तथा समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों एवं संवादात्मक सत्रों का आयोजन शामिल है।

(ङ): आयुष मंत्रालय अपनी सूचना, शिक्षा एवं संचार (आईईसी) गतिविधियों के माध्यम से विभिन्न जन-जागरूकता कार्यक्रमों एवं जनसंपर्क पहलों का आयोजन कर भारत की आयुष चिकित्सा पद्धति की पारंपरिक चिकित्सा विरासत का व्यापक प्रचार-प्रसार करता है। इन गतिविधियों के अंतर्गत राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय आरोग्य मेले, आयुर्वेद पर्व, योग फेस्ट/उत्सव, स्वास्थ्य मेले/प्रदर्शनियाँ, महत्वपूर्ण दिवसों का आयोजन, संगोष्ठियाँ, वेबिनार, सम्मेलन, परिसंवाद आदि आयोजित किए जाते हैं। विगत पाँच वर्षों के आईईसी योजना के अंतर्गत देशभर में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों तथा उनके लिए प्रदान की गई वित्तीय सहायता का विवरण **संलग्नक-I** में दिया गया है।

*****

संलग्नक

विगत पाँच वर्षों के दौरान आईईसी योजना के अंतर्गत देशभर में आयोजित कार्यक्रमों का विवरण:

वित्तीय वर्ष	आयोजित कार्यक्रमों की संख्या	राशि (करोड़ रुपए में)
2021-22	36	30.04
2022-23	51	51.60
2023-24	36	33.12
2024-25	33	29.82
2025-26	40	83.64